जल का हो संयमित तौर से प्रयोग दोहन पर लगे पूरी तरह से रोक

झारखंड सेंट्रल यूनिवर्सिटी में जल संरक्षण पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

जागरण संवाददाता, रांची : जल संरक्षण से लेकर जल के प्रयोग के प्रति हमें जागरूक होना होगा। सुनिश्चित करना होगा कि जल का प्रयोग संयमित तौर से हो। साथ ही उसे बेहतर तरीके से संरक्षित करने पर भी कार्य करना होगा। भूगर्भ जल का दोहन इन दिनों हो रहा है। भूगर्भ जलस्तर लगातार नीचे जा रहा है। समय से पहले संभलना होगा। कठोर नियम बनाने होंगे। साथ ही जागरूकता भी लानी होगी।

ये बातें सीयूजे के कुलपति डॉ. नंद कुमार यादव ने केंद्रीय विवि में जलप्रबंधन पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में कहीं। कुलपति ने कहा कि दुनिया में जल संरक्षण व संचयन को लेकर बहस हो रही है। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन इस दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि जल मानव अस्तित्व और विकास के लिए सबसे बड़ा आधार है, पर पिछले कुछ दशकों से जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और संबद्ध उपभोक्तावादी संस्कृति ने प्राकृतिक जल के विज्ञान चक्र को काफी नुकसान पहुंचाया है। इनसे निपटने के लिए शोध कार्य पूरी दुनिया में जारी है झारखंड का केंद्रीय विश्वविद्यालय भी इस विषय को लेकर काफी गंभीर है।

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का उद्घाटन करते कुलपति नंद कुमार यादव व अन्य ● जागरण

सम्मेलन का उद्घाटन कुलपति प्रो. नंद कुमार यादव ने किया। श्रीलंका के जल संसाधन परिषद के सभापति एसीएम जुल्फिकार बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित हुए। विभिन्न सत्रों में एविफेर रिचार्ज, ग्राउंड वॉटर मॉडलिंग स्टडीज, वॉटर क्वालिटी मैनेजमेंट ऑफ सर्फेस, जलविज्ञान मॉडलिंग, बाढ़, खानों के भूतल जल प्रबंधन और जल के कुशल उपयोग पर चर्चा हुई। वाटर रिसोर्स बोर्ड श्रीलंका के चेयरमैन, इंस्टीट्यूट ऑफ रिवर मॉडलिंग बंग्लादेश के एक्सक्यूटिव डायरेक्टर सहित कई वैज्ञानिक सेमिनार में शामिल हुए। सेमिनार की अध्यक्षता सीयूजे के वाटर इनजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट के हेड अजय कुमार सिंह ने किया। सम्मेलन का आयोजन दो दिनों तक विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम तथा कंप्यूटर लैब में किया जाएगा। सम्मेलन में कुल छह सत्र होंगे। दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के भूगोल केंद्र से प्रो. आरपी सिंह, फेयर आब्जर्वर यूएस के संपादक डॉ. अतुल सिंह, सीटूएसटू प्रा. लि. के अध्यक्ष डॉ. अजय प्रधान, एआईटी, थाईलैंड के जल अभियंत्रण एवं प्रबंधन केंद्र से प्रो. मुकुंद एस बेबल, डीएचआई, नई दिल्ली के एमडी डॉ. फ्लेमिंग जैकबसेन, आईआईटी रुढ़की के भूतपूर्व अतिथि प्रो. डॉ. एसएन राय, जीबी पंत यूनिवर्सिटी से प्रो. पीके सिंह, डॉ. भारत शर्मा और एसवी कॉलेज रायपुर से प्रो. वीके पांडेय ने उपस्थित होकर सम्मेलन का प्रतिनिधित्व किया।

भूगर्भ जलस्तर जा रहा नीचे, इसे सहेजने की है जरूरत, इसके लिए कठोर नियम बनाने होंगे, साथ लोगों को करना होगा जागरूक

दो दिनी अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में दुनियाभर से वैज्ञानिक पहुंचे राजधानी, जल समस्या पर जताई चिंता

जल प्रबंधन के तरीके घर-घर तक पहुंचाएं

रांची | वरीय संवाददाता

झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय ब्रांबे (सीयूजे) में जल व दूषित जल प्रबंधन पर अंतरराष्ट्रीय दो दिवसीय कार्यशाला मंगलवार को शुरू हुई। उद्घाटन के मौके पर श्रीलंका के जल साधन परिषद के सभापति एसीएम जुल्फिकार मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे।

उन्होंने जल प्रबंधन पर कहा कि इस विषय को लेकर आज दुनिया भर के वैज्ञानिक शोध में जुटे हुए हैं। वे बेहतर विकल्प व जल प्रबंधन के तरीके को घर-घर तक पहुंचने के लिए प्रयास कर रहे हैं, जिससे पूरे विश्व में पानी को लेकर हो रही समस्या को खत्म किया जा सके। लोगों को भी समझना होगा कि वे पानी को दूषित व बर्बाद ना करें।

विचार

- जल प्रबंधन पर पूरी दुनिया के वैज्ञानिक शोध कर रहे हैं
- पानी की बर्बादी और जल प्रदूषण पर मंथन किया गया

इससे पहले कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विवि के कुलपति प्रो नंद कुमार ने कहा कि आज जल संरक्षण व संचयन को लेकर विश्व में बहस छिड़ी हुई है। अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन इस दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। कुछ दशकों से जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण से भू-गर्भ जल स्तर काफी नीचे चला गया है, जिससे निपटने के लिए शोध कार्य पूरी दुनिया में जारी है, केंद्रीय विवि इसेलेकर काफी गंभीर है।

सीयूजे में मंगलवार को कार्यशाला का उद्घाटन करते अतिथिगण। ● हिन्दुस्तान

भू-गर्भ जल स्तर बढ़ाने के लिए हुई पहल : कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में ग्राउंड वॉटर रिचार्ज, वॉटर क्वालिटी मैनेजमेंट ऑफ सर्फेस, बाढ़ व खानों के भूतल जल प्रबंधन, सर्वश्रेष्ठ प्रबंधन प्रथाओं व जल के कुशल उपयोग पर चर्चा हुई। वाटर रिसोर्स बोर्ड श्रीलंका के चेयरमैन, इंस्टीट्यूट ऑफ रिवर मॉडलिंग बांग्लादेश के निदेशक, आईसीएआर के वैज्ञानिक, अमेरिका के कई वैज्ञानिक सेमिनार में अपनी बातों को रख अन्य देशों की स्थिति से रू-ब-रू कराया।

दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के भूगोल केंद्र से प्रो आरपी सिंह, फेयर ऑब्जर्वर (यूएस) के संपादक डॉ अतुल सिंह, सीटूएसटू के अध्यक्ष डॉ अजय प्रधान, थाईलैंड के जल अभियंत्रण प्रो मुकुंद एस बेबल, रायपुर से प्रो वीके पांडेय ने सम्मेलन में अपने विचार रखें।